ॐ

वर्ष-10, अंक-19, 1-15 अक्टूबर, 2025 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

ISSN 2456-1207

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

मूल्य : 15 रुपये
कुल पृष्ठ 52

अशान्त विश्व में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की प्रासंगिकता

छठी श्रीमती कांतिदेवी जैन स्मृति व्याख्यान माला, 2025
विशेष रिपोर्ट

दीपावली की हार्दिक
शुभकामनाएँ

रिश्तों में आदर और विश्वास आवश्यक है—आचार्य चाणक्य

श्रीमती कांतिदेवी जैन स्मृति

त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय

व्याख्यानमाला के छठे संस्करण का भव्य आयोजन

अशांत विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् की प्रासांगिकता विषय पर व्यापक चर्चा

सहभागी देश : भारत, आयरलैंड, बुल्गारिया, उज्बेकिस्तान, थाईलैंड, अमेरिका, जापान, बेलफास्ट, अर्मेनिया, कोरिया, यूक्रेन, अजरबैजान, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, नेपाल और ऑस्ट्रेलिया

श्रीमती कांतिदेवी जैन
[1 जनवरी 1958–30 सितम्बर 2019]

आर.पी. तोमर

भारत अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केंद्र गुरुग्राम, चाणक्य वार्ता एवं हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान तथा भारत के पांच प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ओडिशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट; बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी; उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी; महाराजा सुहेल देव राज्य विश्वविद्यालय, आजमगढ़; ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् तथा नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित श्रीमती कांतिदेवी जैन स्मृति व्याख्यानमाला के छठे वर्ष 'अशांत विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् की प्रासांगिकता' थीम पर तीन दिन 16 देशों के वक्ताओं ने अपने शोधपूर्ण वक्तव्य रखकर विश्व शांति की अलख जगाई। इस दौरान व्याख्यानमाला से सोशल मीडिया के माध्यम से हजारों लोग जुड़े और उन्होंने वर्तमान विश्व के सामने आ रही चुनौतियों, युद्ध की विभीषिका, देशों के मध्य बढ़ रहे तनाव और अनेक ऐसी समस्याओं के बारे में उन्हीं देशों के विद्वान वक्ताओं से सुना, जो इस समस्या से ग्रसित हैं।

इस वर्ष व्याख्यानमाला में जहाँ नागालैंड के उच्च शिक्षा एवं पर्यटन मंत्री तेमजीन इमना अलोंग जुड़े, वहीं वरिष्ठ आई.एफ.एस. अधिकारी तथा भारत सरकार के पूर्व विदेश सचिव शशांक जी ने भी अपना शोधपूर्ण वक्तव्य दिया। नागालैंड के पूर्व मुख्य सचिव डॉ. जे. आलम (आई.ए.एस.) ने जहाँ नागालैंड के अशांत वातावरण से लेकर विश्व के विभिन्न देशों की चर्चा की, वहीं सहयोगी पाँचों विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भी अपने सारगर्भित विचार रखे। आयरलैंड में भारत के राजदूत अखिलेश मिश्रा ने भी अपने वक्तव्य से इस व्याख्यानमाला को समृद्ध किया।

इस व्याख्यानमाला की सफलता एवं श्रीमती कांतिदेवी जैन को श्रद्धांजलि देने हेतु भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री सी.वी आनंद बोस, महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल श्री भगत सिंह कोश्यारी एवं अनेकों विशिष्ट जनों ने अपने पत्र भी भेजे।

■ अशान्त विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् (पहला दिन)

तेमजीन इमना अलोंग
दीमापुर

पंकज सिन्हा
दीमापुर

डॉ. योगेन्द्र नारायण
नोएडा

अखिलेश मिश्रा
आयरलैंड

डॉ. मौना कौशिक
बल्गारिया

डॉ. उल्फत मुखीबोवा
ताशकंद

शिखा रस्तोगी
बैंकाक

डॉ. रमा
नई दिल्ली

डॉ. अमित जैन
नई दिल्ली

अभिषेक त्रिपाठी
आयरलैंड

व्याख्यानमाला का प्रथम दिन

इस वर्ष की व्याख्यानमाला 19, 20 एवं 21 सितंबर 2025 को जूम माध्यम से ऑनलाइन आयोजित की गई। प्रथम दिवस व्याख्यानमाला का परिचय कार्यक्रम के संचालन अभिषेक त्रिपाठी, आयरलैंड द्वारा कराया गया। उसके बाद श्रीमती कांतिदेवी जी के जीवन और कार्यों पर आधारित डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। इसके पश्चात अंतरराष्ट्रीय व्याख्यानमाला के संयोजक डॉ. अमित जैन, संपादक–चाणक्य वार्ता द्वारा विषय प्रवर्तन किया गया। उन्होंने इस वर्ष यह थीम क्यों चुनी गई, इस विषय पर अपने विचार रखे। व्याख्यानमाला की सहयोगी संस्था हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा ने

उन्होंने हिन्दी व संस्कृत में बोलते हुए कहा कि इस व्याख्यानमाला का विषय 'अशांत विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् की प्रासंगिकता' आज के वक्त के हिसाब से बहुत महत्वपूर्ण है। राजदूत ने सर्व प्रथम श्रीमती कांतिदेवी जैन को नमन करते हुए अपने वक्तव्य का प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि यह विषय अत्यंत प्रासंगिक है, बहुआयामी अनेक पक्षों से विवेचनीय है। वसुधैव कुटुंबकम् भारत द्वारा आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन, विश्व बंधुत्व, भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों और विदेश नीति का अभिन्न अंग बन चुका है। यह राष्ट्र की स्वाभाविक वैश्विक चेतना का प्रतीक बन गया है लेकिन 'वसुधैव कुटुंबकम्' केवल एक नारा या राजनीतिक स्लोगन या डिप्लोमेटिक अंग नहीं है। यदि इसकी मूल भावना शाब्दिक मात्र होती तो कुटुंबवाद, परिवारवाद की तरह से विवाद एवं आलोचना का विषय हो जाता। सामान्य इतिहास की दृष्टि से भी कुटुंब की भावना उद्धत और सपुर्तनीय नहीं प्रतीत होती है।

अधिकांश युद्ध और रक्तरंजित षड्यंत्रों के पीछे कुटुंबियों का ही पारस्परिक व्यवस्था विद्वेष रहा है। वसुधैव कुटुंबकम् का वास्तविक अर्थ वैश्विक परिवारवाद या विश्व के सभी मनुष्य एक परिवार के सदस्य हैं, यही है, इसे झुठलाने की भ्रामक कोशिश हो रही है। यह एक अत्यंत गहन दर्शनिकता तथा ज्ञान का निरूपण है। इसी प्रकार पहचान का भाव और शांति का भाव भी अत्यंत गंभीर है। आज का विश्व इतना अशांत क्यों है? इतना संघर्ष, उथल-पुथल और अनिश्चितता क्यों है?

भारतीय राजदूत ने कहा कि भारतीय ऋषियों ने हर प्रकार के दुख संताप और भय का कारण अज्ञानता को बतलाया है। अज्ञानता वश ही रस्सी को हम सांप समझ लेते हैं और भयभीत हो जाते हैं। आंख मूंद कर सो जाने पर भी अनेक प्रकार के दुःस्वप्न देखते हैं और नाना प्रकार के कष्टों का अनुभव करते हैं। आयरलैंड में भारत के राजदूत श्री मिश्रा ने कहा कि संस्कृत के श्लोक ओम शांति, अंतरिक्ष शांति, पृथ्वी शांति, रापा शांति, रोषधय शांति, वनस्पति शांति, विश्व देवा शांति, ब्रह्म ओम शांति, सर्व ओम शांति सर्व समावेशी, एकतावादी और अपने अतिरिक्त सभी जीव जंतुओं के प्रति भी आत्मभाव उदार करने वाले हैं और यह आचरण भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को विश्व में अद्वितीय और समस्त जीवों के कल्याण हेतु प्रासंगिक बनाता है। हजारों वर्षों से भारत का यही राष्ट्रीय आचरण और चरित्र प्रतिदिन दिखता है। विकास, साझेदारी, सहयोग, वैक्सीन डिप्लोमेसी भारत की बड़ी पहचान रही है। सांप का भय तभी दूर होता है जब हम रस्सी को रस्सी के रूप में देखने लगते हैं। अतीत काल में अपने उद्धत आचरण के कारण ही भारत विश्व गुरु के रूप में पूजित रहा है। आवश्यकता है कि सभी भारतीय अपने उद्देश्य, जीवन दृष्टि, कर्तव्य परायणता से अपने देश को दिव्य और तेजस्वी बनाएं।

शांत रहें, इंसान बनकर रहें: प्रो. उल्फत मुखीबोवा

ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, ताशकंद, उज्बेकिस्तान से बोलते हुए प्रो. (डॉ.) उल्फत मुखीबोवा ने कहा कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' के दो शब्दों में बड़ा दर्शन छिपा हुआ है। मैं इतिहास पढ़ाती हूँ। मुझे पता है कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' का सार ऋग्वेद में भी मिलता है। इसका मूलमंत्र है-जीवों को कष्ट न देना, शांति रखना, भक्ति साहित्य एवं प्रेम का प्रचार-प्रसार करना। इस पर अमल करते हुए हम मनुष्यों व जीवों पर प्रेम करके भगवान के प्रति प्यार दिखा सकते हैं। उज्बेकिस्तान में भी भारत की तरह से सच बोलने वाले लोग हैं। आपस में सब मिलते हैं प्रेम व प्यार बढ़ाते हैं। यदि रास्ते में कोई छोटा बच्चा रोते हुए मिल जाये तो कोई भी उससे जाति या धर्म नहीं पूछेगा बल्कि उसे चुप कराएगा, यहीं 'वसुधैव कुटुंबकम्' है। यही करना चाहिए।

प्रो. उल्फत ने कहा कि कॉलेज या अपने काम से आते-जाते हुए जब हमें दूसरे लोग मिलते हैं तो उनसे परिचय होता है। उसके बाद रोज दुआ-सलाम होती है। मिलते जुलते दोस्ती हो जाती है। हफ्ते में एक दिन किसी रेस्टोरेंट में साथ बैठकर खाते-पीते हैं। बाते करते हैं। यही 'वसुधैव कुटुंबकम्' है। इसे अमल में लाए। हर पल को जिंदगी का हिस्सा बनाये। मुखीबोवा ने कहा कि आज विश्व के अनेक देशों में झगड़ा है। यूक्रेन-रूस युद्ध चल रहा है। यह सब जमीन को लेकर है। उन्होंने प्रश्न किया कि कौन इस जमीन को साथ लेकर जाएगा? सबको खाली हाथ ही जाना है। जिस जमीन को लेकर झगड़ा है, वही जमीन उसे खा लेगी। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को राजनीतिज्ञों को समझना चाहिए। पूरी दुनिया एक ही है। इसका प्रचार-प्रसार करना विद्वानों का कर्तव्य है। इसके मूल को जवानों को भी समझाए। उन्होंने कहा कि देश का भविष्य जवानों के हाथों में है। वक्त का तकाजा है कि 'शांत रहें, इंसान बनके रहें'। 'वसुधैव कुटुंबकम्' जिंदगी बचाने और जिंदगी देने का नारा है। ऐसा नियम बनाये। इसे जीवन का हिस्सा बनाये। तभी विश्व में शांति रह सकती है।

भारत अपने लिए नहीं विश्व के लिए सोचता है: शिखा रस्तोगी

ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल, बैंकाक, थाईलैंड की हिन्दी विभागाध्यक्ष शिखा रस्तोगी ने अपने वक्तव्य को 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' से शुरू करते हुए कहा कि आज नस्ल और भाषा के नाम पर संघर्ष हो रहे हैं। विश्व अशांति से घिरा है। युद्ध की विभीषिका ने लाखों लोगों को शरणार्थी बनाया है। आतंकवाद निर्दोषों का जीवन छीन रहा है। जलवायु परिवर्तन ने पूरी दुनिया को हिला दिया है। सवाल पैदा होता है कि क्या दुनिया विभाजन व संघर्ष की राह पर ही चलती रहेगी? कौन सी ऐसी चीज है जो विश्व में एकता लाएगी?

शिखा रस्तोगी ने कहा कि एकता केवल दो शब्दों के सूत्र 'वसुधैव कुटुंबकम्' से ही आ सकती है। भारत में बुद्ध ने शांति का संदेश दिया, भगवान महावीर ने 'जियो और जीने दो' का पाठ पढ़ाया। महात्मा गांधी ने 'अहिंसा' का संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में पूरी दुनिया को एक परिवार मानने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि थाईलैंड व भारत दोनों की सभ्यता एक है। दोनों ही रामकथा के जीवंत रूप है। थाईलैंड व भारत की व्यवहारिक नीति भी एक ही है। शिखा रस्तोगी ने कहा कि अशांत विश्व में समझौते नहीं बल्कि परिवार जैसा विश्वास चाहिए। भारत का 'वसुधैव कुटुंबकम्' केवल नारा नहीं बल्कि जीवन का मूल मंत्र है। भारत अपने लिए नहीं विश्व के लिए सोचता है। जरूरी है कि सभी देश भारत की तरह से विश्व को एक परिवार माने, शांति व करुणा का संदेश दें। यह सब वसुधैव कुटुंबकम् से ही संभव हो सकता है।

मिलिट्री बजट को कम किया जाए व 5 देशों की वीटो भी हो खत्म : डॉ. योगेंद्र नारायण

भारत के रक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव, राज्यसभा के महासचिव रहे देश के वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी गढ़वाल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. योगेंद्र नारायण ने अपने वक्तव्य में 'अशांत विश्व में वसुधैव कुटुंबकम् की प्रासंगिकता' पर